Driver Ki Maut (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 186
Weekly Booklet : 186

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" से लिये गए मवाद की क़िस्त)

ड्राईवर की मौत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ड्राईवर की मौत

येह रिसाला (**ड्राईवर की मौत**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. **98987 32611** • Email : **hind.printing92@gmail.com**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ड्राईवर की मौत

दुआए अ़त्तार : या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 19 सफ़हात का रिसाला "**ड्राईवर की मौत**" पढ़ या सुन ले उस को ईमानो आ़फ़िय्यत के साथ मदीने में जलवए महबूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न होना नसीब फ़रमा । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

बा कमाल फ़िरिश्ता

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : बेशक **अल्लाह** करीम ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र (Grave) पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की ताक़त अ़ता फ़रमाई है, पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है । कहता है, फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा है ।

(مجمع الزوائد، 251/10 حدیث: 17291)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللّٰه ! दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला किस क़दर बख़्त वर है कि उस का नाम मअ़ वलदिय्यत बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पेश किया जाता है । यहां येह **नुक्ता** भी इन्तिहाई ईमान अफ़रोज़ है कि क़ब्रे मुनव्वर عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर हाज़िर फ़िरिश्ते को इस क़दर ज़ियादा क़ुव्वते समाअ़त (या'नी सुनने की

ताक़त) दी गई है कि वोह दुन्या के कोने कोने में एक ही वक़्त के अन्दर दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले लाखों मुसल्मानों की इन्तिहाई धीमी आवाज़ (Low Voice) भी सुन लिया है और उसे इल्मे ग़ैब (Knowledge Of Unseen) भी अ़ता किया गया है कि वोह दुरूदे पाक पढ़ने वालों के नाम बल्कि उन के वालिद साहिबान तक के नाम जान लेता है। जब ख़ादिमे दरबारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कुव्वते समाअ़त और **इल्मे ग़ैब** का येह ह़ाल है तो अपनी उम्मत से प्यार करने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात व **इल्मे ग़ैब** की क्या शान होगी ! वोह क्यूं न अपने गुलामों को पहचानेंगे और क्यूं न उन की फ़रियाद सुन कर بِاِذْنِ الله (या'नी **अल्लाह** पाक की इजाज़त से) इमदाद फ़रमाएंगे !

मैं क़ुरबां इस अदाए दस्त गीरी पर मेरे आक़ा मदद को आ गए जब भी पुकारा या रसूलल्लाह

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

खाना भी इबादत है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाना **अल्लाह** पाक की बहुत ही प्यारी ने'मत है, इस में हमारे लिये त़रह़ त़रह़ की लज़्ज़त भी रखी गई है। अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ ह़लाल खाना कारे सवाब है, मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं, ''खाना भी **अल्लाह** पाक की इबादत है मोमिन के लिये।'' मज़ीद फ़रमाते हैं, ''देखो निकाह़ सुन्नते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام है मगर ह़ज़रते सय्यिदुना **यह़या** عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने निकाह़ नहीं किया मगर खाना वोह सुन्नत है कि अज़ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ता ह़ज़रते सय्यिदुना **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब ही नबियों ने

ज़रूर खाया। जो शख़्स **भूक हड़ताल** (Hunger Strike) कर के भूक से जान दे दे वोह ह़राम मौत मरेगा।'' (तफ़्सीरे नई़मी, जि. 8, स. 51)

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''खाने वाला शुक्र गुज़ार वैसा ही है जैसा सब्र करने वाला रोज़ादार।''

(ترمذی، 219/4، حدیث:2494)

लुक़्मए ह़लाल की फ़ज़ीलत

हम अगर **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना खाएं तो इस में हमारे लिये बरकतें ही बरकतें हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एह्याउल उ़लूम की दूसरी जिल्द में एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का क़ौल नक़्ल करते हैं : कि मुसल्मान जब ह़लाल खाने का पहला लुक़्मा खाता है, उस के पहले के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं। और जो शख़्स त़लबे ह़लाल के लिये रुस्वाई के मक़ाम पर जाता है उस के गुनाह दरख़्त के पत्तों की त़रह़ झड़ते हैं। (احیاء علوم الدین، 116/2)

खाने की निय्यत किस त़रह़ करें

खाते वक़्त भूक लगी होना सुन्नत है। खाने में येह निय्यत कीजिये कि **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने के लिये खा रहा हूं। खाने से फ़क़त़ लज़्ज़त मक़्सूद न हो। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन शैबान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं, ''मैं ने 80 बरस से कोई भी चीज़ फ़क़त़ लज़्ज़ते नफ़्स की ग़रज़ से नहीं खाई।'' (احیاءُ العُلوم ج۲ص ۵) कम खाने की निय्यत भी करे कि इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत जभी सच्ची होगी क्यूं कि पेट भर के खाने से

इबादत में उलटा रुकावट पैदा होती है ! कम खाना सिह़्ह़त के लिये मुफ़ीद है ऐसे शख़्स को डॉक्टर की ज़रूरत कम ही पेश आती है।

खाना कितना खाना चाहिये

अल्लाह पाक के सच्चे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है : आदमी अपने पेट से ज़ियादा बुरा बरतन नहीं भरता, इन्सान के लिये चन्द लुक़्मे (Morsels) काफ़ी हैं जो उस की पीठ (Back) को सीधा रखें अगर ऐसा न कर सके तो तिहाई (1/3) खाने के लिये तिहाई पानी के लिये और एक तिहाई सांस के लिये हो। (ابن ماجہ، 48/4، حدیث:3349)

निय्यत की अहम्मिय्यत

बुख़ारी शरीफ़ की सब से पहली ह़दीसे पाक है, اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है। (بخاری، 5/1، حدیث:1)

जो अ़मल **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये किया जाए उस में सवाब मिलता है, रिया या'नी अगर दिखावे के लिये किया जाए तो वोही अ़मल गुनाह का बाइ़स बन जाता है और अगर कुछ भी निय्यत न हो तो न सवाब मिले न गुनाह जब कि वोह अ़मल फ़ी नफ़्सिही मुबाह़ (या'नी जाइज़) हो। मसलन कोई ह़लाल चीज़ जैसा कि आइसक्रीम या मिठाई या रोटी खाई और इस में कुछ भी निय्यत न की तो न सवाब होगा न गुनाह। अलबत्ता क़ियामत में ह़िसाब का मुआ़मला दरपेश होगा जैसा कि सरकारे नामदार, दो जहां के सरदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है, حَلَالُهَا حِسَابٌ وَّ حَرَامُهَا عَذَابٌ या'नी इस के ह़लाल में ह़िसाब है और ह़राम में अ़ज़ाब। (فردوس بماثور الخطاب، 283/5، حدیث:8192)

सुरमा क्यूं डाला ?

अल्लाह पाक की अ़ता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : बेशक क़ियामत के दिन आदमी से उस के हर हर काम ह़त्ता कि आंख के सुरमे के बारे में भी पूछा जाएगा।

(حلیۃ الاولیاء، 31/10، حدیث:14404)

लिहाज़ा आ़फ़िय्यत (Safety) इसी में है कि अपने हर मुबाह़ काम में अच्छी अच्छी निय्यतें शामिल कर ली जाएं। चुनान्चे एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं मैं हर काम में निय्यत पसन्द करता हूं ह़त्ता कि खाने, पीने, सोने और बैतुल ख़ला में दाख़िल होने के लिये भी। (احیاء العلوم، 4/126)

ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है : मुसल्मान की निय्यत (Intention) उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، 6/185، حدیث:5942) निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, ज़बान से कहना शर्त़ नहीं बल्कि ज़बान से निय्यत के अल्फ़ाज़ कहे मगर दिल में निय्यत मौजूद न हुई तो निय्यत ही नहीं कहलाएगी और सवाब नहीं मिलेगा। खाने की 43 निय्यतें पेशे ख़िदमत हैं इन में से जो जो ह़स्बे ह़ाल हों और मुम्किन हों कर लेनी चाहिएं। येह भी अ़र्ज़ करता चलूं कि येह निय्यतें मुकम्मल नहीं, इ़ल्मे निय्यत रखने वाला इस के ज़रीए और बहुत सारी निय्यतें निकाल सकता है। जितनी निय्यतें ज़ियादा होंगी उतना ही सवाब भी ज़ियादा मिलेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه

खाने की 43 निय्यतें

(1, 2) खाने से क़ब्ल और बा'द का वुज़ू करूंगा (या'नी हाथ मुंह का अगला ह़िस्सा धोऊंगा और कुल्लियां (Mouth-Rinse) करूंगा) (3) खाना खा कर

इबादत (4) तिलावत (5) वालिदैन की ख़िदमत (6) तह़सीले इल्मे दीन (7) सुन्नतों की तरबियत की ख़ातिर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र (8) अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत (9) उमूरे आख़िरत और (10) ह़स्बे ज़रूरत कस्बे ह़लाल के लिये भागदौड़ पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा (येह निय्यतें उसी सूरत में मुफ़ीद होंगी जब कि भूक से कम खाए। ख़ूब डट कर खाने से उलटा इबादत में सुस्ती पैदा होती, गुनाहों की त़रफ़ रुज्ह़ान बढ़ता और पेट की ख़राबियां जनम लेती हैं) (11) ज़मीन पर (12) इत्तिबाए़ सुन्नत (Following Sunnah) में दस्तर ख़्वान पर (13) (चादर या कुरते के दामन के ज़रीए़) पर्दे में पर्दा कर के (14) सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर (15) खाने से क़ब्ल बिस्मिल्लाह और (16) दीगर दुआ़एं पढ़ कर (17) तीन उंग्लियों से (18) छोटे छोटे निवाले बना कर (19) अच्छी त़रह़ चबा कर खाऊंगा (20) हर लुक़्मे पर يَا وَاجِدُ पढ़ूंगा (या हर लुक़्मे के ख़त्म पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه और हर लुक़्मे के आग़ाज़ पर يَا وَاجِدُ और बिस्मिल्लाह) (21) जो दाना वग़ैरा गिर गया उठा कर खा लूंगा (22) रोटी का हर निवाला सालन के बरतन के ऊपर कर के तोड़ूंगा (ताकि रोटी के ज़र्रात बरतन ही में गिरें) (23) हड्डी और गर्म मसालह़ा वग़ैरा अच्छी त़रह़ साफ़ करने और चाटने के बा'द फेंकूंगा (24) भूक से कम खाऊंगा (25) आख़िर में सुन्नत की अदाएगी की निय्यत से बरतन और (26) तीन बार उंग्लियां चाटूंगा (27) खाने के बरतन धो पी कर एक गुलाम आज़ाद करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा (28) जब तक दस्तर ख़्वान न उठा लिया जाए उस वक़्त तक बिला ज़रूरत नहीं उठूंगा (कि येह भी सुन्नत है) (29) खाने के बा'द मअ़ अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ मस्नून दुआ़एं पढ़ूंगा (30) ख़िलाल करूंगा।

मिल कर खाने की मज़ीद निय्यतें

(31) दस्तर ख़्वान पर अगर कोई आ़लिम या बुज़ुर्ग मौजूद हुए तो उन से पहले खाना शुरूअ़ नहीं करूंगा (32) मुसल्मानों के क़ुर्ब की बरकतें ह़ासिल करूंगा (33) उन को बोटी, कद्दू शरीफ़, खुरचन और पानी वग़ैरा की पेशकश कर के उन का दिल ख़ुश करूंगा (किसी की प्लेट में अपने हाथ से उठा कर डाल देना आदाब के ख़िलाफ़ है। जो चीज़ हम ने डाली हो सकता है उस वक़्त उसे उस की ख़्वाहिश न हो) (34) उन के सामने मुस्कुरा कर सदक़े का सवाब कमाऊंगा (35) किसी को मुस्कुराता देख कर इस की मस्नून दुआ़ पढ़ूंगा (मुस्कुराता देख कर पढ़ने की दुआ़ : اَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ या'नी **अल्लाह** पाक तुझे सदा हंसता रखे। (بخاری،403/4،حدیث:3294) (36) खाने की निय्यतें और (37) सुन्नतें बताऊंगा (38) मौक़अ़ मिला तो खाने से क़ब्ल और (39) बा'द की दुआ़एं पढ़ाऊंगा (40) ग़िज़ा का उ़म्दा ह़िस्सा मसलन बोटी वग़ैरा ह़िर्स से बचते हुए दूसरों की ख़ातिर ईसार करूंगा (ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : जो शख़्स उस चीज़ को जिस की ख़ुद इसे ह़ाजत हो दूसरे को दे दे **अल्लाह** इसे बख़्श देगा।) (اتحاف السادة المتقين،779/9) (41) उन को ख़िलाल और (42) तीन उंग्लियों से खाने की मश्क़ करने के लिये रबड़ बेन्ड का तोह़फ़ा पेश करूंगा (43) खाने के हर लुक़्मे पर हो सका तो इस निय्यत के साथ बुलन्द आवाज़ से يَا وَاحِدُ कहूंगा कि दूसरों को भी याद आ जाए।

खाने का वुज़ू मोह़ताजी दूर करता है

ह़ज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है, ''खाने से पहले और बा'द में **वुज़ू** करना मोह़ताजी (Dependency) को दूर

करता है और येह मुर्सलीन عَلَيۡهِمُ السَّلَام की सुन्नतों में से है।''

(معجم اوسط، 231/5، حدیث:7166)

खाने का वुज़ू घर में भलाई बढ़ाता है

अल्लाह करीम के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो येह पसन्द करे कि **अल्लाह** पाक उस के घर में ख़ैर (या'नी भलाई) ज़ियादा करे तो जब खाना ह़ाज़िर किया जाए, वुज़ू करे और जब उठाया जाए उस वक़्त भी वुज़ू करे।'' (ابن ماجہ، 9/4، حدیث:3260)

खाने के वुज़ू की नेकियां

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنۡهَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''खाने से पहले **वुज़ू** करना **एक नेकी** और खाने के बा'द करना **दो नेकियां** हैं।''

(جامع صغیر ص ٥٧٤ حدیث ٩٦٨٢)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाने के अव्वल आख़िर हाथ वग़ैरा धोने में सुस्ती नहीं करनी चाहिये। ख़ुदा की क़सम ! ''एक नेकी'' की अस्ल ह़क़ीक़त बरोज़े क़ियामत ही पता चलेगी कि जब किसी की सिर्फ़ एक ही नेकी कम पड़ रही होगी और वोह अपने अ़ज़ीज़ों से सिर्फ़ एक नेकी का सुवाल करेगा मगर देने के लिये कोई तय्यार न होगा।

शैत़ान से ह़िफ़ाज़त

दो जहां के सरदार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है, ''खाने से पहले और बा'द वुज़ू (या'नी हाथ मुंह धोना)

रिज़्क़ में कुशादगी (Affluence) करता और शैत़ान को दूर करता है।''

(کَنزُالعُمّال ج ۱۰ ص ۱۰٦ حدیث ٤٠٧٥٥)

बीमारियों से हिफ़ाज़त के नुस्ख़े

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाने के वुज़ू से मुराद नमाज़ वाला वुज़ू नहीं बल्कि इस में दोनों हाथ गिट्टों तक और मुंह का अगला हिस्सा धोना और कुल्ली करना है। ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ''तौरेत शरीफ़ में दो बार हाथ धोने कुल्ली करने का हुक्म था, खाने से पहले और खाने के बा'द मगर यहूद ने सिर्फ़ बा'द वाला बाक़ी रखा, पहले का ज़िक्र मिटा दिया। खाने से पहले हाथ धोने कुल्ली करने की तरग़ीब इस लिये है कि उ़मूमन कामकाज की वज्ह से हाथ मैले, दांत मैले हो जाते हैं, और खाने से हाथ मुंह चिक्ने हो जाते हैं लिहाज़ा दोनों वक़्त सफ़ाई की जाए। खाना खा कर कुल्ली करने वाला शख़्स اِنۡ شَآءَاللّٰہ दांतों के मूज़ी मरज़ पाएरिया (Pyorrhea) से मह़फ़ूज़ रहेगा, वुज़ू में मिस्वाक का आ़दी दांतों और मे'दे के अमराज़ से बचा रहता है। खाना खाने के फ़ौरन बा'द पेशाब करने की आ़दत डालो इस से गुर्दा व मसाने के अमराज़ से हिफ़ाज़त होती है। बहुत मुजर्रब (या'नी आज़माया हुवा) है।''

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/32)

ड्राइवर की पुर असरार मौत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन सुन्नत में अ़ज़मत है, जहां सुन्नत पर अ़मल करने में सवाब मिलता है वहीं इस के दुन्यवी फ़वाइद भी होते हैं। खाने से पहले दोनों हाथ पहुंचों तक धो लेना सुन्नत है। मुंह का अगला हिस्सा धोना और कुल्ली भी कर लेना चाहिये। चूंकि हाथों से जुदा जुदा काम

किये जाते हैं और वोह मुख़्तलिफ़ चीज़ों से मस होते हैं लिहाज़ा इन पर मैल कुचैल और कई त़रह़ के जरासीम लग जाते हैं। खाने से पहले हाथ धो लेने से इन की सफ़ाई हो जाती और इस सुन्नत की बरकत के सबब हमें कई बीमारियों से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल हो जाता है। खाने से पहले धोए हुए हाथ न पोंछे जाएं कि तोलिया वग़ैरा के जरासीम हाथों में लग सकते हैं। कहा जाता है, एक ट्रक ड्राइवर ने होटल में खाना खाया और खाने के फ़ौरन बा'द तड़प तड़प कर मर गया। दूसरे कई लोगों ने भी उस होटल में खाना खाया मगर उन्हें कुछ भी न हुवा। तह़क़ीक़ शुरूअ़ हुई, किसी ने बताया कि ड्राइवर ने खाने से क़ब्ल होटल के क़रीब ट्रक के टायर चेक किये थे, फिर हाथ धोए बिग़ैर उस ने खाना खाया था। चुनान्चे ट्रक के टायरों को चेक किया गया तो इन्किशाफ़ हुवा कि पहिय्ये के नीचे एक ज़हरीला सांप कुचला गया था जिस का ज़ह्र टायर पर फैल गया और वोह ड्राइवर के हाथों पर लग गया, हाथ न धोने के सबब खाने के साथ वोह ज़ह्र पेट में चला गया जो कि ड्राइवर की फ़ौरी मौत का सबब बना।

अल्लाह की रह़मत से सुन्नत में शराफ़त है   सरकार की सुन्नत में हम सब की ह़िफ़ाज़त है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

बाज़ार में खाना

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "बाज़ार में खाना बुरा है।" (جامع صغير ص١٨٤ حديث ٣٠٧٣) बहारे शरीअ़त के मुसन्निफ ह़ज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं, "रास्ते और बाज़ार में खाना मक्रूह है।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 19)

बाज़ार की रोटी

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनूजी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : इमामे जलील ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन फ़ज़्ल رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने दौराने ता'लीम कभी भी बाज़ार से खाना नहीं खाया उन के अब्बूजान हर जुमुआ़ को अपने गाउं से उन के लिये खाना ले आते थे। एक मरतबा जब वोह खाना देने आए तो उन के कमरे में बाज़ार की रोटी रखी देख कर सख़्त नाराज़ हुए और अपने बेटे से बात तक नहीं की। साह़िब ज़ादे ने मा'ज़िरत करते हुए अ़र्ज़ की, अब्बाजान ! येह रोटी बाज़ार से मैं नहीं लाया मेरा रफ़ीक़ मेरी रिज़ा मन्दी के बिग़ैर ख़रीद कर लाया था। वालिद साह़िब ने येह सुन कर डांटते हुए फ़रमाया : अगर तुम्हारे अन्दर तक़्वा होता तो तुम्हारे दोस्त को कभी भी येह जुर्अत न होती। (تَعۡلِیۡمُ الۡمُتَعَلِّمِ طَرِیۡقُ التَّعَلُّمِ، ص67)

बाज़ारी खाना बे बरकत होता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ तक़्वे का किस क़दर ख़याल रखते थे और अपनी औलाद की कैसी ज़बर दस्त तरबियत फ़रमाते थे कि होटल की और बाज़ारी ग़िज़ाएं उन्हें नहीं खाने देते थे। ह़ज़रते इमाम ज़रनूजी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : अगर मुम्किन हो तो ग़ैर मुफ़ीद और बाज़ारी खाने से परहेज़ करना चाहिये क्यूं कि बाज़ारी खाना इन्सान को ख़ियानत व गन्दगी के क़रीब और ज़िक्रे ख़ुदावन्दी से दूर कर देता है। इस की वज्ह येह है कि बाज़ार के खानों पर ग़ुरबा और फ़ुक़रा की नज़रें भी पड़ती हैं और वोह अपनी ग़ुरबत व इफ़्लास की बिना पर जब उस खाने को नहीं ख़रीद सकते तो दिल बरदाश्ता हो जाते हैं और यूं उस खाने से बरकत उठ जाती है।" (تَعۡلِیۡمُ الۡمُتَعَلِّمِ طَرِیۡقُ التَّعَلُّمِ، ص88)

होटल में खाना कैसा ?

बाज़ारों में ठेलों और बस्तों वग़ैरा पर त़रह़ त़रह़ की चटपटी ग़िज़ाओं के चटख़ारे लेने वाले इस से दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें। जब बाज़ार में खाना बुरा है तो फ़िल्मी गीतों की धुनों में होटलों के अन्दर वक़्त बे वक़्त खाना, चाय की चुस्कियां लेना और ठन्डे मश्रूबात पीना किस क़दर मा'यूब होगा ! अगर गाने न भी बज रहे हों तब भी होटलों का माह़ोल अक्सर ग़फ़्लतों भरा होता है, इन में जा कर बैठना शुरफ़ा और बा शर्अ़ ह़ज़रात के शायाने शान नहीं। लिहाज़ा ज़रूरत हो तब भी ख़रीद कर किसी मह़फ़ूज़ जगह पर खाने पीने ही में भलाई है। हां जो मजबूर है वोह मा'ज़ूर है। मगर जब होटल में फ़िल्में डिरामे या गाने बाजे का सिल्सिला हो तो वहां न जाए कि जानबूझ कर मूसीक़ी की आवाज़ सुनना गुनाह है। चुनान्चे

मूसीक़ी की आवाज़ से बचना वाजिब है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं, "(लचके तोड़े के साथ) नाचना, मज़ाक़ उड़ाना, ताली बजाना, (Clapping Hands) सितार के तार बजाना, बरबत़ (Oud), सारंगी (Violin), रबाब (Rebab), बांसरी (Flute), क़ानून (एक साज़ का नाम), झांझन, बिगल बजाना मक्रूहे तह़रीमी (या'नी क़रीब ब ह़राम) है क्यूं कि येह सब कुफ़्फ़ार के शिआ़र (Tradition) हैं, नीज़ बांसरी और (मूसीक़ी के) दीगर साज़ों का सुनना भी ह़राम है अगर अचानक सुन लिया तो मा'ज़ूर है। (رَدُّالْمُحْتَار ج۹ص٥٦٦)

कानों में उंग्लियां डालना

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ुश नसीब हैं वोह मुसल्मान जो कलामे रब्बे काएनात, ना'ते शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सुन्नतों भरे बयानात तो सुनते हैं मगर फ़िल्मी गानों और मूसीक़ी की आवाज़ आने पर ब सबबे ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी न सुनने की पूरी कोशिश करते हुए कानों में उंग्लियां दाख़िल कर के वहां से फ़ौरन दूर हट जाते हैं। चुनान्चे (अ़ज़ीम त़ाबई बुज़ुर्ग) ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं, मैं बचपन में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا के साथ कहीं जा रहा था कि रास्ते में मिज़्मार (या'नी बाजा) बजाने की आवाज़ आने लगी, इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने अपने कानों में उंग्लियां डाल दीं और रास्ते से दूसरी त़रफ़ हट गए और दूर जाने के बा'द पूछा, नाफ़ेअ़ ! आवाज़ आ रही है ? मैं ने अ़र्ज़ की, अब नहीं आ रही। तो कानों से उंग्लायां निकालीं और इर्शाद फ़रमाया : एक बार मैं **सरकारे** मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कहीं जा रहा था, सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी त़रह़ किया जो मैं ने किया।

(ابوداؤد ج٤ ص ٣٠٧ الحديث ٤٩٢٤)

मूसीक़ी की आवाज़ आती हो तो हट जाइये

मा'लूम हुवा कि जूं ही मूसीक़ी की आवाज़ आए फ़ौरन कानों में उंग्लियां दाख़िल कर के वहां से दूर हट जाए क्यूं कि अगर उंग्लियां तो कानों में डाल दीं मगर वहीं खड़े या बैठे रहे या मा'मूली सा परे हट गए तो मूसीक़ी की आवाज़ से बच नहीं सकेंगे। उंग्लियां कानों में डाल कर न सही मगर किसी त़रह़

भी मूसीक़ी की आवाज़ से बचने की भरपूर कोशिश करना वाजिब है। आह ! आह ! आह ! अब तो सय्यारों, त़य्यारों, मकानों, दुकानों, गलियों बाज़ारों में जिस त़रफ़ भी चले जाइये मूसीक़ी की धुनें और गानों की आवाज़ें सुनाई देती हैं और जो आ़शिक़े रसूल कानों में उंग्लियां डाल कर दूर हट जाए, उस का मज़ाक़ उड़े।

वोह दौर आया कि दीवानए नबी के लिये

हर एक हाथ में पथ्थर दिखाई देता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल के साथ वाबस्तगी से ज़िन्दगी में वोह वोह ह़ैरत अंगेज़ तब्दीलियां आती हैं कि कई बार इस्लामी भाइयों को कहते सुना गया है कि काश ! हमें बहुत पहले दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल मुयस्सर आ गया होता ! दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल की बरकतों से मालामाल एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे,

घर दर्स की बरकत की ह़िकायत

आकोला (महाराष्ट्र, हिन्द) के एक इस्लामी भाई घराना बद मज़्हबों के साथ तअ़ल्लुक़ात के बाइ़स बद अ़मली के साथ साथ बद अ़क़ीदगी की त़रफ़ भी गामज़न था, एक दिन उन के घर के सब अफ़राद मिल कर T.V. देखने में मश्ग़ूल थे कि उन का सतरह (17) सालह छोटा भाई जो कि दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में आने जाने लगा था, वोह T.V. की त़रफ़ पीठ किये उलटा चलता हुवा कमरे में दाख़िल हुवा और अपनी कोई चीज़ अलमारी से निकाल कर इसी अन्दाज़ पर वापस पलटा। उस की येह अ़जीबो ग़रीब ह़रकत

देख कर वोह गुस्से में चीख़े : "क्या तेरा दिमाग़ ख़राब हो गया है जो आज येह अ़जीब बचकाना ह़रकत कर रहा है !" वोह जवाबी कारवाई किये बिग़ैर दूसरे कमरे में चले गए। उन की अम्मीजान ने ख़ुलासा किया, कि इस ने मुझे बताया था कि मैं ने क़सम खाई है कि आयिन्दा T.V. की त़रफ़ देखूंगा भी नहीं ! उन्हों ने ग़ुस्से की वज्ह से छोटे भाई से बातचीत बन्द कर दी। उस ने घर में सब को इकट्ठा कर के फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स जारी कर दिया। येह उस में नहीं बैठते थे, एक दिन क़रीब हो कर बैठ गए कि सुनूं तो सही येह दर्स में क्या बताता है, सुना तो बहुत अच्छा लगा, लिहाज़ा रोज़ाना घर दर्स में शरीक होने लगे। रफ़्ता रफ़्ता उन के दिल की सियाही दूर होने लगी, ह़त्ता कि दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी देने लगे। اَلْحَمْدُلِلّٰه अ़क़्ल ठिकाने आई, बद मज़्हबों की सोह़बत से जान छुटी और चेहरे पर दाढ़ी सजाई नीज़ बद अ़क़ीदा मुक़र्ररि की गुमराह कुन केसिटें जो कि शौक़ से सुना करते थे, अब इस की जगह मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात सुनने लगे।

बुरी सोह़बतों से कनारा कशी कर — और अच्छों के पास आ के पा मदनी माह़ोल
तुम्हें लुत्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का — क़रीब आ के देखो ज़रा मदनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ईमान की ह़िफ़ाज़त का ज़रीआ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! اَلْحَمْدُلِلّٰه घर दर्स में अहले ख़ाना के ईमान के तह़फ़्फ़ुज़ और इस्लाह़े आ'माल के अस्बाब मौजूद हैं। इसी त़रह़ इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की अख़्लाक़ी इस्लाह़ के लिये

फ़िक्रे मदीना के ज़रीए रोज़ाना नेक काम का रिसाला पुर करने की भी सेटिंग है और इस रिसाले में 23 वें और 24 वें नम्बर ''**इस्लाहे आ'माल**'' के मुताबिक़ हर एक को रोज़ाना **फ़ैज़ाने सुन्नत** से ''**घर दर्स**'' और मस्जिद दर्स देने या सुनने की तरग़ीब भी मौजूद है। आप सब की ख़िदमत में घर दर्स जारी करने की इल्तिजा है।

अमल का हो जज़्बा अता या इलाही गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
सआदत मिले दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की रोज़ाना दो मरतबा या इलाही

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

क़ब्र की रोशनी

दर्सो बयान के सवाब का भी क्या कहना ! हज़रते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ''शरहुस्सुदूर'' में नक़्ल करते हैं, **अल्लाह** पाक ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام की तरफ़ वही फ़रमाई : ''भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वहशत न हो।'' (حلیۃ الاولیاء ج٦ص٥ حدیث٧٦٢٢)

क़ब्रें जगमगा रही होंगी

इस रिवायत से नेकी की बात सीखने सिखाने का अज्रो सवाब मा'लूम हुवा। सुन्नतों भरा बयान करने या दर्स देने और सुनने वालों के तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे, اِنْ شَآءَاللّٰہ उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी क़िस्म का ख़ौफ़ महसूस नहीं होगा। इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए नेकी

की दा'वत देने वालों, मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और ग़ौरो फ़िक्र कर के नेक काम का रिसाला रोज़ाना पुर करने की तरग़ीब दिलाने वालों और सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत पेश करने वालों नीज़ मुबल्लिग़ीन की नेकी की दा'वत को सुनने वालों की क़ुबूर भी اِنْ شَآءَاللّٰه हुज़ूर मुफ़ीजुन्नूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े नूरुन अ़ला नूर होंगी।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 152)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

घर वालों की इस्लाह़ ज़रूरी है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपनी और अपने अहले ख़ाना की इस्लाह़ हम पर ज़रूरी है चुनान्चे पारह **28 सूरतुत्तह़रीम** की आयत नम्बर 6 में इर्शादे ख़ुदावन्दी है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ (پ28، التحریم:6)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ''घर दर्स'' के ज़रीए़ भी इस आयते करीमा में दिये गए हुक्म पर अ़मल मुम्किन हो जाएगा। नीज़ इस ज़िम्न में मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे रसाइल पढ़ना पढ़ाना और सुन्नतों भरे बयानात और मदनी मुज़ाकरा घर में चलाना भी मुफ़ीद है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه सुन्नतों भरे रसाइल बयानात और मदनी मुज़ाकरों के ज़रिए भी कई लोगों की इस्लाह़ के वाक़िआ़त मिलते हैं, चुनान्चे

मक्तबतुल मदीना के रिसाले की बहार

एक इस्लामी भाई स्कूल में बुरे माहौल के सबब फ़िल्मों के जुनून की हद तक शौक़ीन था, सिर्फ़ फ़िल्में देखने दूसरे शहरों तक पहुंच जाता। फ़िल्मों के SEX APEAL मनाज़िर की नुहूसत के बाइस مَعَاذَاللہ बे पर्दा लड़कियों का कॉलेज तक पीछा करना और रोज़ाना दाढ़ी मुंडाना उस की आदत थी। नुहूसत बालाए नुहूसत येह कि उस पर थियेटर में, सरकस और मौत के कूंएं के अन्दर काम करने का भूत सुवार हो गया। उस के घर वाले इन्तिहाई परेशान थे। एक दिन अब्बू जान ने **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मादारान से बात कर के अ़लाक़े के आ़शिक़ाने रसूल के हमराह मदनी क़ाफ़िले में सफ़र पर भेज दिया। आख़िरी दिन अमीरे क़ाफ़िला ने मक्तबतुल मदीना का रिसाला "**काले बिच्छू**" पढ़ने को दिया, उन्हों ने पढ़ा तो कांप उठे। फ़ौरन गुनाहों से तौबा की और चेहरे पर एक मुठ्ठी दाढ़ी सजाने की निय्यत कर ली। वापसी पर दा'वते इस्लामी के होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की और मक्तबतुल मदीना की जानिब से जारी होने वाले बयान जिस का नाम "**ढल जाएगी येह जवानी**" सुना तो उस ने दिल की दुन्या ही बदल कर रख दी ! اَلْحَمْدُلِلّٰہ वोह पाबन्दी से नमाज़ें पढ़ने लगें और दा'वते इस्लामी का मदनी काम शुरूअ़ कर दिया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

घर दर्स के मदनी फूल

☆ तमाम इस्लामी भाई अपने घर वालों पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के घर दर्स में शिर्कत करने के लिये तय्यार करें, मगर इस के लिये ज़िद न की जाए क्यूं कि बेजा ज़िद और ग़ुस्से से काम बिगड़ जाता है।

☆ घर दर्स शुरूअ़ करने के लिये घर के उस फ़र्द पर पहले कोशिश कीजिये, जिस के दिल में आप के लिये कुछ नर्म गोशा हो, अगर वोह शामिल हो जाएगा तो आहिस्ता आहिस्ता दूसरा भी शामिल होगा यूं ता'दाद बढ़ती जाएगी लेकिन येह मुआ़मला सब्र आज़मा है, इस में सब्र का दामन थामे रखना होगा।

दुआ़ए अ़त्तार : या **अल्लाह** पाक ! मुझे और जो घर दर्स देते हैं या देती हैं इन सब को बल्कि हम सब को अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में जन्नतुल फ़िरदौस में जगह अ़ता फ़रमा। या **अल्लाह** पाक ! जो रहती दुन्या तक दा'वते इस्लामी से वाबस्ता रहते हुए घर दर्स की तरकीब करता रहेगा उन के ह़क़ में भी मेरी येह टूटी फूटी दुआ़ क़बूल कर ले।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

है तुझ से दुआ़ रब्बे अक्बर ! मक़बूल हो "फ़ैज़ाने सुन्नत"

मस्जिद मस्जिद घर घर पढ़ कर, इस्लामी भाई सुनाता रहे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

औलाद को कम अ़क़्ली से बचाने का नुस्ख़ा

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम ﷺ का फ़रमान है : जो शख़्स दस्तर ख़्वान से खाने के गिरे हुए टुकड़ों को उठा कर खाए वोह फ़राख़ी की ज़िन्दगी गुज़ारता है और उस की औलाद और औलाद की औलाद कम अ़क़्ली से महफ़ूज़ रहती है।

(كنز العمال، ١٥/١١١، حديث: ٤٠٨١٥ , फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 262)

978-969-722-171-4
01082183

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net